<u>प्रतिवेदन</u>

दिनांक: 3 फरवरी 2026

द्वि-दिशात्मक सहयोगात्मक शिक्षण कार्यशाला

"अपने संविधान को जानें"
अभियान – "हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान"

डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, जो सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान है, तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, जो भारतीय भाषाओं के संवर्धन और प्रसार के लिए समर्पित संस्था है, के संयुक्त तत्वावधान में **"हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान"** अभियान के अंतर्गत **"अपने संविधान को जानें"** शीर्षक से एक द्वि-दिशात्मक सहयोगात्मक शिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन दिनांक **3 फ़रवरी 2026** को डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के परिसर में किया गया। यह आयोजन विशेष रूप से सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा को भारतीय संविधान के मूल्यों से सशक्त रूप से जोड़ना, संवैधानिक चेतना का विस्तार करना तथा शैक्षणिक संस्थानों को संवैधानिक संस्कृति के केंद्र के रूप में विकसित करना था।

इस कार्यशाला की मूल अवधारणा “द्वि-दिशात्मक सहयोगात्मक शिक्षण” पर आधारित थी। द्वि-दिशात्मक शिक्षण से आशय उस पद्धति से है जिसमें ज्ञान का प्रवाह केवल वक्ता से श्रोता की ओर नहीं होता, बल्कि संवाद, प्रश्नोत्तर, अनुभव-साझाकरण और सहभागिता के माध्यम से दोनों दिशाओं में होता है। सहयोगात्मक शिक्षण का अर्थ है कि विद्यार्थी, शिक्षक, विषय-विशेषज्ञ और संस्थान मिलकर सीखने की सामूहिक प्रक्रिया में भाग लेते हैं। इस प्रकार यह कार्यशाला परंपरागत व्याख्यान पद्धति से भिन्न, सहभागितापरक और अनुभवाधारित शिक्षण का उदाहरण थी। इसका लक्ष्य था कि विद्यार्थी संविधान को केवल पाठ्यपुस्तक का विषय न समझें, बल्कि उसे अपने जीवन, समाज और राष्ट्र से जुड़े एक जीवंत दस्तावेज के रूप में ग्रहण करें।

कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः **10:00 बजे** स्वागत एवं जलपान के साथ हुआ। इसके उपरांत प्रतिभागियों का पंजीकरण एवं किट वितरण किया गया , जिससे सभी प्रधानाचार्यों को कार्यशाला की विषयवस्तु से संबंधित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जा सके। उद्घाटन सत्र प्रातः **10:30 बजे** आरम्भ हुआ, जो अत्यंत गरिमामय एवं उद्देश्यपरक रहा। उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम **दीप प्रज्वलन**, **सामूहिक राष्ट्रगान** तथा अतिथियों के सम्मान के साथ कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत हुई।

स्वागत वक्तव्य हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष **श्री सुधाकर पाठक** द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने भाषा , संस्कृति और संविधान के अंतर्संबंध पर प्रकाश डालते हुए विद्यालयी स्तर पर संवैधानिक मूल्यों के प्रसार की आवश्यकता रेखांकित की।

इसके पश्चात् **बीज वक्तव्य** दिल्ली विश्वविद्यालय की संविधान विशेषज्ञ एवं सहायक प्राध्यापक **डॉ. सीमा सिंह** द्वारा दिया गया। उन्होंने संविधान को केवल एक विधिक दस्तावेज़ नहीं , बल्कि एक जीवंत सामाजिक अनुबंध के रूप में प्रस्तुत करते हुए बताया कि विद्यालयों में संवैधानिक मूल्यों का व्यावहारिक समावेश ही लोकतांत्रिक नागरिकता की आधारशिला है। **विशिष्ट अतिथि** के रूप में उ पस्थित **श्री वी. के. शेखर**, भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी (सेवानिवृत्त), संविधान विशेषज्ञ, ने अपने उद्बोधन में संविधान की प्रस्तावना , मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों की समसामयिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रधानाचार्यों से अपेक्षा की कि वे विद्यालयों को केवल परीक्षा-केंद्रित न रखकर मूल्य-आधारित शिक्षा के सशक्त केंद्र बनाएं। **मुख्य अतिथि** के रूप में **प्रो. (डॉ.) के. जी. सुरेश**, निदेशक, इंडिया हैबिटेट सेंटर, ने अपने संबोधन में संविधान , नागरिक जिम्मेदारी और नेतृत्व के संबंध पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विद्यालय प्रमुखों की भूमिका केवल प्रशासक की नहीं , बल्कि संवैधानिक संस्कृति के वाहक की है। इसके उपरांत विभिन्न विद्यालयों के **प्रधानाचार्यों एवं विभागाध्यक्षों** ने संक्षिप्त उद्बोधन प्रस्तुत किए, जिनमें उन्होंने अपने -अपने संस्थानों में संवैधानिक गतिविधियों , प्रार्थना सभा में प्रस्तावना -पाठ, छात्र संसद, और मूल्य-आधारित कार्यक्रमों के अनुभव साझा किए।

दोपहर **1:00 से 2:00 बजे** तक भोजन अवकाश रहा, जिसके दौरान प्रतिभागियों के बीच अनौपचारिक संवाद एवं विचार-विनिमय हुआ। **समापन सत्र** दोपहर **2:00 बजे** आरम्भ हुआ। इस सत्र में **स्वागत वक्तव्य** डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के निदेशक **श्री आकाश पाटील** द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने केंद्र की शैक्षणिक पहलों एवं संविधान जागरूकता अभियानों की रूपरेखा प्रस्तुत की। **विशिष्ट वक्ता** के रूप में वरिष्ठ पत्रकार **सुश्री रीमा गौतम** ने मीडिया, लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों के संबंध पर विचार रखते हुए युवाओं में संवैधानिक समझ विकसित करने में शिक्षा संस्थानों की भूमिका पर बल दिया। **विशिष्ट अतिथि प्रो. नीलम गोयल**, प्राचार्या, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने उच्च शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा के मध्य संवैधानिक मूल्यों के सतत सेतु की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। समापन सत्र में प्रधानाचार्यों एवं विभागाध्यक्षों द्वारा पुनः संक्षिप्त विचार साझा किए गए। तत्पश्चात प्रतिभागियों को **प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न** प्रदान किए गए। कार्यक्रम का समापन औपचारिक **धन्यवाद ज्ञापन** के साथ हुआ।

यह कार्यशाला न केवल एक शैक्षणिक आयोजन थी, बल्कि विद्यालयी नेतृत्व के माध्यम से संविधान को जीवन्त अनुभव में रूपांतरित करने की एक गंभीर और संगठित पहल सिद्ध हुई। प्रतिभागियों ने इसे अत्यंत उपयोगी, प्रेरणादायक एवं व्यवहारिक बताया तथा भविष्य में ऐसे और कार्यक्रम आयोजित करने की अपेक्षा व्यक्त की।

Report

Date: 3 February 2026

Two-Way Collaborative Learning Workshop

“Know Your Constitution”

Campaign – **“Our Constitution, Our Pride”**

Dr. Ambedkar International Centre, which works under the Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India, and Hindustani Bhasha Academy, an organization that promotes Indian languages, jointly organized a teaching workshop under the campaign **“Our Constitution, Our Pride.”** The title of the workshop was **“Know Your Constitution.”** It was held on **3 February 2026** at Dr. Ambedkar International Centre. This program was specially arranged for **school principals** from government and private schools. The aim was to connect school education strongly with the values of the Indian Constitution, spread awareness about the Constitution, and help schools become places where constitutional values are practiced.

The workshop was based on the idea of **two-way cooperative learning**. Two-way learning means that learning does not happen only from the speaker to the listeners. Instead, it

happens through discussion, questions, sharing experiences, and participation from everyone. Cooperative learning means students, teachers, experts, and institutions learn together as a team. So, this workshop was different from normal lectures. It was more interactive and based on real experiences. The goal was that students should not see the Constitution as just a subject in a textbook, but as a living document connected to their lives, society, and the nation.

The program started at **10:00 AM** with welcome and refreshments. After that, registration and kit distribution were done so that all principals received study materials related to the workshop. The inauguration session began at **10:30 AM** and was very respectful and meaningful. The session began with lighting of the lamp, the national anthem, and honoring the guests. The **welcome speech** was given by **Shri Sudhakar Pathak**, Chairman of Hindustani Bhasha Academy. He spoke about the connection between language, culture, and the Constitution, and why constitutional values should be taught in schools. Then the **keynote speech** was given by **Dr. Seema Singh**, Constitution expert and Assistant Professor from Delhi University. She explained that the Constitution is not only a legal book but a living social agreement, and schools play an important role in building democratic citizens. The **special guest**, **Shri V. K. Shekhar**, retired IPS officer and Constitution expert, spoke about the Preamble, Fundamental Rights, and Duties. He said schools should focus not only on exams but also on value-based education. The **chief guest**, **Prof. (Dr.) K. G. Suresh**, Director, India Habitat Centre, spoke about the link between the Constitution, citizenship, and leadership. He said school heads are not only administrators but carriers of constitutional culture.

After this, different school principals and heads of departments shared short speeches. They talked about activities like reading the Preamble in morning assembly, student parliaments, and value-based programs in their schools. There was a **lunch break from 1:00 PM to 2:00 PM**, where participants had informal discussions.

The **valedictory session** started at **2:00 PM**. The welcome address was given by **Shri Akash Patil**, Director of Dr. Ambedkar International Centre. He spoke about the Centre’s educational initiatives and Constitution awareness programs. **Senior journalist Ms. Reema Gautam** spoke about media, democracy, and constitutional values, and the role of schools in building awareness among youth. **Prof. Neelam Goyal**, Principal of Shyama Prasad Mukherji College for Women, Delhi University, spoke about the need to connect school education and higher education through constitutional values. In the end, principals and department heads again shared brief thoughts. Participants were given **certificates and mementos**. The program ended with a formal vote of thanks.

This workshop was not just an academic event. It was a serious and planned effort to make the Constitution a living experience through school leadership. Participants found it very useful, inspiring, and practical, and they expressed the need for more such programs in the future.